"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 08, Issue: 02, Mar. – Apr. 2021 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

गांधी और उनका समाज दर्शन

प्रा. डॉ. रेखा मुळे
हिन्दी विभाग
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
पाटोदा बीड, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना :–

महात्मा गांधी के चरणोंपर श्रद्धापूर्वक नमन करती हुई है। गांधी को कोटी कोटी प्रणाम यह संगोष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है। समसामाजिक परिप्रेश्च में गांधीवाद लगभग सात दशक हो गये। गांधी को जाकर आज भौतिक साधनों की भरमार है। जीवन को जाकर आज भौतिक साधनों की भरमार है। जीवन का आनंद उठाना है। आत्मिक शांती को प्राप्त करना गांधी दर्शन, गांधीवाद को अपनाना चाहिए गांधीजी के कुछ बिंदुओ का अध्ययन करके मानवी जीवन को नये दृष्टीसे देखने की आवश्यकता है। राजनिती में गांधीजी को कॉंग्रेस का नेहत्व उनके हाथ मे आया और विशाल भारत को गांधी ने देखा और उसी ऑख से देश की समस्या क्या है। उसे परखा बिहार में किसनों पर जो अत्याचार हुआ सबसे पहैला उनका बिंदु था। आज की राजनिती नैतिक नाही है। राजनीति में नौतिकता चाहिए। यह अत्यंत प्रांसगिक है। राजनीति में नौतिकता चाहिए। यह अत्यंत प्रांसगिक है। धर्म में अच्छे गुरु का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। निरपेक्ष सत्य और सत्य को लेकर गांधीजी बहुत आग्रही थे देश काल परे होता है। वही ईश्वर होता है। अहिंसा , मन, वचन कार्ये किसी के विरुध्द नही जाना चाहिए। मानव का हित देखना विश्व में शांति लाना अत्यंत आवश्यक है। सत्याग्रह का सिध्दांत जीवन का परम लक्ष्य है। सत्य की रक्षा करना और सत्य आत्मा की बहुत बडी शक्ती है। आज भी सत्याग्रह जौसा बिंदु प्रांसगिक है। आज भी शासक को समराज्य समजते थे। उनका और एक बिंदु है। ग्राम पंचायत गाँव का शासन आज यह प्रासंगिक लगता है। भारतीय मानसिकता में गांधीजी का व्यक्तित्व पूर्णत्व सम है। यहाँ तक एक अव्दैत की

स्थिती है। एक आम भारतीय मनुष्य के जीवन की विसंगतियों को हम गांधीजी के व्यक्तिमत्व मे ंमनुष्य की सहजता, सहिष्णुता उदारता, अन्य धर्मो के प्राति उसका आदरभाव शारीरिक क्राम करने की उसकी दृष्टि मन की सादरगी को गांधीजी के व्यक्तित्व में देखा जा सकता है। गांधीजी की जो प्रतिभा भारतीय मन में घेसी हुई है और पीढी दर पीढी वह अधिक गहरी होती जारही है।

अहिंसा यह मानवंश का जीवन धर्म है मनुष्य संबंधो का अस्तित्व अहिंसा पर आधारित है सत्य तथा अहिंसा इन दो नौतिक तत्वों पर आधारित गांधीजी का सर्वोदयवाद सामाजिक, राजनितीक और आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण दर्शन है।

भारत के लिए गांधीजीका योगदान बहुत बढा है। देश के अने हिस्सों में संवेदनशील शिक्षित नवयुवक और नव युकतियाँ शोषित पिडित, दलित औरं अदिवासियों को संगठित कर उन्हे अन्याय और अत्याचार के विरोध में खडे करने के लिए अपना संपूर्ण जीवन दाव पर लगा रहे है। इस प्रकार के अनेक आंदोलनों के कारण राज्य सरकारो को और केंद्र सरकार को पुराने नियम विधान रद्द करने पडे और नये विधान बनने पडे है। यह संभव है की गांधीजी का व्यक्तित्व तेजस्वी तथा उनकी उतनी तेजस्वी विचारधारा के कारण मौन रुपसे अन्याय को सहने वालों के लिए गांधी विचारधारा आज भी संजीवनी का काम कर रही है

महात्मा गांधी दर्शन–

राष्ट्रपिता महात्मागांधी विश्व के एक महान तत्ववेत्ता और एक महात्मा के रुप में पुरा विश्व उन्हे जानता है। उनके जीवन के पहेलु समाज दृष्टा थे। गुजरात में इनका जन्म पोरबंदर में हुआ था। उनका पुरा जीवन गीता पर आधारीत था। गांधीजी गीता के माध्यम् से व्यक्ति के जीवन को गीता आगे ले जाती है। साथ ही भारतीय और पाश्चात्य दर्शन मी उनके प्रभावी जीवन में देखने को मिलता है। व्यक्तित्व आदर्शवादी था व्यवहार प्रयोजनवादी था। वे कहैते हर व्यक्ति का विचार और आदर करना चाहिए। तभी मानव अपने सपनों को साकार कर सकता है। शिक्षा सेही हर व्यक्ति का विकास होसकता है। शिक्षा के आधार पर व्यक्ति स्वालंबी बन सकता है। सत्यको परखना है तो हर व्यक्ति ने गीता का अध्ययन करना आवश्यक है। गांधीजी कहैते है की ईश्वर प्रकृती मे प्राप्त है। और प्रकृती में ही ईश्वर जगत का निर्माण है। इसलिए व्यक्ति अपने कर्मो सेही महान है। मानव की प्रकृती बदलती

है लेकिन सत्य नही बदलता है।संसार एक तरफ भौतिक है और दूसरी तरु आध्यत्मिक है। सत्य अहिंसा आवश्यक है। और शिक्षासेही मानव का शरीर मन और बालक का विकास करती है।

मोहनचंद करमचंद गांधीजी आंदोलन के प्रमुख नेता थे उनकी अवधारणा थी की भारत को स्वतंत्र करना गांधीजीने अपना जीवन सच्ची खोज के लिए समर्पित किया और सच्चाई के लिए और उत्तम लडाई लढने के लिए मनुष्य के भय को दूर करना आवश्यक है।

भारत एवं आंदोलन के एक प्रमुख नेता होने के कारण आध्यात्मिकता होने के कारण पुरी दुनिया को स्वातंत्रता के प्रति जागृत करना यह उनका मुख्य लक्ष था। उन्होंने अपनी आत्मकथा को सत्य का प्रयोग नाम दिया, शिक्षा को ज्यादा मानते थे क्यों कि शिक्षा सेही मानव का बौध्दितु और मानसिक विकास होता है। बिना अध्यात्म से हमारा जीवन सफल नही ऐस कहैते थे। आचार विचार और संस्कार से ही बालक बन सकता है। जबरदस्ती अनुशासन नही करना चाहीए। स्त्री पुरुष समानता सामने रखकर उन्होंने स्त्री और पुरुष दोनों को भी शिक्षा की आवश्यकता है।

भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनौतिक एवं आध्यत्मिक नेता थे। सत्याग्रहके माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रजी नेता थे उनकी इस आवधारणा की निव संपूर्ण अंहिसा के वौश्विक शिक्षा भी कहाँ जाता है। शिक्षा का माध्यम् मातृभाषा होना चाहिए। गांधीजी के विचार के सारे सारे बिंदु अत्यंत व्यावहारीक और शाश्वत है, गांधीजीका जीवन एक व्यक्तित्व का दर्शन है। यह अत्यंत प्रांसगिक है। विश्वशांती की भावना आज अत्यंत आवश्यक है। यह भावना मानवी जीवन के लक्ष्य तक पुहुँच जाती है। इसी लिए आज भी गांधीजी के विचार प्रांसगिक है।

आज गांधी विचार पर पुरी दुनिया चल रही है। माहात्मा , बुध्द, महावीर, सत्य, अहिसा का प्रयोग किया है। गांधीजी कहैते की सत्य को अपनाकर अपना बल बना देना आवश्यक है। आंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोन को सामने रखते विश्व में गांधीजी का प्रभाव जबरदस्त दिखाई देता है। गांधीजी कहैते है गाँव गाँव चलो गांधीजी का आंतरराष्ट्रीय होना एक बहुत बडा वास्तव्य हमारी व्यवस्था परम्परा व्यक्ति को रोख रही थी। गॉव गॉव पुहुचने से गॉव गॉव चलने वाली यात्रा आंतरराष्ट्रीय तक पहुँचती है। साथ ही कहैते है की राष्ट्रवाद बडा

अच्दा है। राष्ट्रवाद के कारण मानव जाती की भलाई है गांधीजी का राष्ट्रवाद बहुत व्यापक था। अंहिसा और सत्याग्रह यह वौश्विक बात है। इसमें सारे के सारे राष्ट्र का हित है। यहाँ पर युद्ध की कोई गुंजाइस नही है। शांतिसेना नौतिकता पर आधारित है।

गांधीजीका सामाजिक विचार–

गांधीजी वर्ण व्यवस्था का गुणगान करते थे। अस्पृशयता समाज का एक कलंक है इस पर काफी चिंतन किया समाज का एक कलंक है। इस पर काफी चिंतन किया समाज में भेदभाव नही होना चाहिए अस्पृशता का कडा विरोध किया साथ ही समाज की महिलाओं की स्थिती को देखकर उनपर होनेवाले अन्याय अत्याचार को धिक्कार बालविवाह इसका भी विरोध किय और आंतर जातीय विवाह का समर्थन किय सांप्रदायिकता को लेकर उन्होने सारे धर्म, पंथ इसमे समभाव देखा। सारे धर्मियों में एकता रही तो वहाँ पर निश्चित रुप से राष्ट्रीय एकता निर्माण होती है।

राष्ट्रीय एकता के ध्यान में रखते हुये उन्होने कहाँ की गो के उपर श्रध्दा रखनी है गो हत्या पाप है। यहाँ पर उनकी धार्मिकता का दर्शन होता है। धार्मिकता के साथ समाज की आर्थिक ता किस प्रकार की होना इस पर मंथन किया समाज के प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, भावात, शिक्षा, सभी को वस्तु की संग्रहता उनको पसंद नाही थी। वे जानते थे की भारत कृषि प्रधान देश है। और कृषिप्रधान देश होने के कारण भारत कृषिपर आधारित है वे भारतीय किसान को स्वतंत्र देखना चाहते थे। वे भारत के हर किसान को स्वंतत्र देखकर जमींदार के दबाव में नही आना चाहते थे। छोटे छोटे कुटीर उद्योग करना चरखा चलाना, मोमबत्ती बनाना इत्यादी। समाज जागृती सुंस्कारीत होना करके रातदिन उसी चिंतन में रहैते थे। शैशिक विचार मानसिक, नौतिक, शारीरीक शिक्षा कितनी आवश्यक है पूर्व बुनिदयादी शिस्त प्रौढ शिक्षा इस पर विशेष ध्यान था।

निष्कर्ष–

गांधीजी विश्वके एक पुरुष थे ईश्वर का अस्तित्व प्रत्येक में है। वही अंतरात्मा है। जीवात्मा उसका अंश है। अंहकार को त्याग कर स्वत: को शुन्य की स्थिती में ले जाने के

बाद वही शेष रह जाता है। सबमें वह है और यह विश्व ही उसकी लिला है। वह प्रकाश है अनंतानंद है। वह प्रेम स्वरुप है। प्रेम ही सबको एकत्र करता है।अस्तिक और नास्तिक देांनों भी सत्य के उपासक ही होते है। सब पर प्रेम शत्रु पर भी प्रेम यह ईश्वरोपासना ही है। इन उपसना में भक्ति तथा प्रार्थना का महत्व है। भक्ति और प्रार्थना से चित्त की शुद्धि होती है।

गांधीजी अहिंसा के सच्चे पुजक थे उनकी अहिंसा सबलो की थी। वीरों की थी युद्ध विरोधी थी। दुनिया व्यवहार करना चाहिए इस पर उनका बल था यह युद्ध विरोधी और अहिंसा–की दृष्टि लेकर ही तो आज संयुक्त राष्ट्र कार्येरत है। संयुक्त राष्ट्र के संविधान में गांधी दर्शन ही तो है। दुनिया के अनेक देशो में नये इतिहास की आशा भरे भविष्य की शुरुवात गांधीवाद के कारण हुई है। इसलिए दृश्य रुप में गांधीवाद भले ही दीखत न हो अदृश्य रुप में वह आडा भी अनेको के भीतर कार्यरत है।

संदर्भ सूची–

1. लोकखस– संपादक डॉ. राजेंद्र सोनवणे.
2. नागरी संगम– 19 गांधी स्मारक मिधि नई दिल्ली.
3. सम कालीन भारतीय साहित्य– 2010
4. नवजागरण
5. अनभवैय– डॉ रतन कुमार पांडे